**Newspaper : Denik Jagran**
**Edition: Delhi | Date: 6th September, 2019 | Pg. : 07**

# नई पीढ़ी का निर्माण शिक्षकों की जिम्मेदारी : कोविंद

**जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली :** राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने शिक्षक दिवस पर ज्ञान के साथ विवेक की जरूरत को भी अनिवार्य बताया है। उन्होंने कहा कि व्यवसायीकरण एवं जीवन-मूल्यों में गिरावट के इस दौर में शिक्षकों की मौलिक जिम्मेदारी है, वह ऐसी नई पीढ़ी तैयार करें जो ज्ञान और विवेक से पूरी तरह से परिपूर्ण हो। यही हमारे शिक्षक होने की सार्थकता है।

विज्ञान भवन में आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रपति ने शिक्षकों को संबोधित करते हुए पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को भी याद किया। राष्ट्रपति ने कहा कि दुनिया आज सूचना युग से ज्ञान युग (नॉलेज सोसाइटी) में प्रवेश कर रही है। ऐसे में केवल ज्ञान पर आश्रित रहने से मानव समाज की सुरक्षा सुनिश्चित करना संभव नहीं होगा। ज्ञान के साथ-साथ विवेक का होना भी जरूरी है। विवेक सम्मत ज्ञान ही मानवीय समस्याओं का समाधान कर सकता है। राष्ट्रपति ने इस मौके पर राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त देश के 46 शिक्षकों को सम्मानित भी किया।

विज्ञान भवन में एसआरडीएवी पब्लिक स्कूल पूर्वी दिल्ली की शिक्षिका विनीता गर्ग व (दाएं) शहीद भाई बाल मुकुंद गवर्नमेंट सर्वोदय विद्यालय दिल्ली के शिक्षक देवेंद्र कुमार को राष्ट्रीय अवार्ड से सम्मानित करते राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, साथ में एचआरडी मंत्री रमेश पोखरियाल ● संजय

राष्ट्रपति कोविंद ने कहा कि इसीलिए हमें वैश्वीकरण और स्पर्धा के इस दौर में भी 'आर्टीफिशियल इटेलीजेंस' और 'मानवीय करुणा (ह्यूमन कॉम्पेशन)' के बीच समन्वय करना है। ऐसे विवेकपूर्ण ज्ञान के आधार पर ही हम जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक जल स्त्रोतों, जहरीली हवा जैसी समस्याओं का समाधान कर सकते है। राष्ट्रपति ने इस दौरान अपने वयोवृद्ध गुरूओं को भी याद किया और बताया कि फरवरी में कानपुर जाकर उन्हें अपने वयोवृद्ध शिक्षकों का आशीर्वाद पाने का सुअवसर मिला था।

कोविंद ने इस दौरान स्वामी विवेकानंद और चाणक्य को भी याद किया। चाणक्य का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि भारत भूमि ने वैसे तो अनेक उच्च श्रेणी के शिक्षक दिए है, इनमें लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व एक नाम चाणक्य का भी है। जिन्होंने तक्षशिला से पढ़ने के बाद उसी विश्वविद्यालय में प्राचार्य और कुलपति भी बने। उन्होंने एक गरीब परिवार के बच्चे चंद्रगुप्त की क्षमताओं को पहचान कर अपना शिष्य बनाया , जो बाद में महान सम्राट बना। एक शिक्षक के रूप में उनका योगदान सभी के लिए अनुकरणीय है। इस मौके पर मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक सहित मंत्रालय के सभी वरिष्ठ अधिकारी और बड़ी संख्या में शिक्षक मौजूद थे।